इस्लामी मालूमात

(भाग-1)

मौलवी हाफ़िज़ बदरूद्दीन (एम० ए०)

इस्लामी मालूमात

(भाग-1)
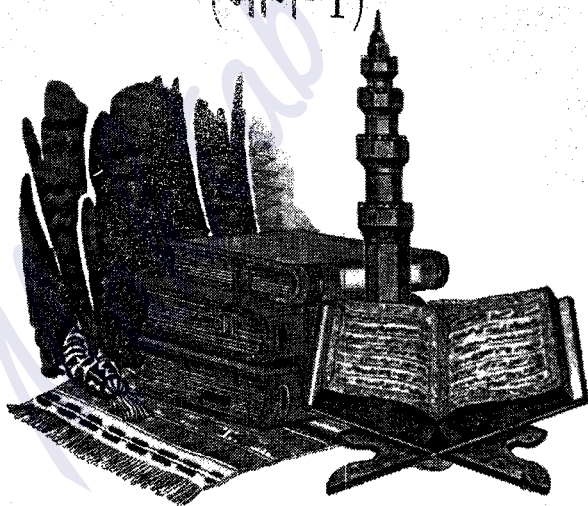
मौलवी हाफ़िज़ बदरूद्दीन (एम० ए०)

पुस्तक का नामः इस्लामी मालूमात (भाग-1)

Islami Maloomat Part-1

लेखकः मौलवी हाफ़िज़ बदरुद्दीन (एम० ए०)

अनुवादकः अहमद [illegible] नदवी

ISBN : 81-7101-551-4

Edition : 2005

A034-05-XL

Published by

IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT (P) LTD.

168/2, Jha House, Hazrat Nizamuddin
New Delhi-110 013 (India)
Tel.: 2692 6832/33 Fax: +91-11-2632 2787
Email: **sales@idara.com idara@yahoo.com**
Visit us at: **www.idara.com**

Typesetted at: **DTP Division**

IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT (P) LTD.

P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

विषय-सूची

विषय पृष्ठ

अपनी बात

मेरी ज़िंदगी के ग्यारह साल जामिया मिल्लिया इस्लामिया में 6 साल से 14 साल तक की उम्र के बच्चों, बच्चियों को दीनियात पढ़ाने में गुज़रे हैं।

इस बीच में महसूस किया कि आज के दौर में नबी सल्ल० की सीरत और इस्लामी तारीख़ की तो बहुत-सी ऐसी किताबें छप चुकी हैं जो इस उम्र के बच्चों की ज़ेहनी सलाहियत के मुताबिक़ हैं।

अलबत्ता इस्लामी अक़ीदों और फ़िक़्ही मसूअलों में ऐसी किताबें मेरी नज़र से नहीं गुज़रीं, जो बच्चों की इस उम्र के तक़ाज़ों को पूरा करती हों।

इस कमी को सामने रख कर मैंने अक़ीदों, मसूअलों और मामलों की किताबों का सिलसिला शुरू किया।

इस सिलसिले की ख़ुसूसियतें

1. प्राइमरी स्कूलों के बच्चों की उम्र के लिहाज़ से आसान ज़ुबान और आसान मफ़हूम (मतलब)

2. चूंकि तालीम के क़ायदों में यह बात बड़ी अहमियत रखती हैं कि बच्चे के जहां मुम्किन हो, उसको क़रीबी महसूस की जाने वाली और दिखाई देने वाली चीज़ों के ज़रिए मालूमात दी जाएं, इसलिए मैंने इसका ख़्याल रखा है और ज़यादा तर स्कूली ज़िंदगी की मिसालों से अक़ीदों और मसूअलों को बच्चों के ज़ेहन में बिठाने की कोशिश की है।

3. फ़िक़्ही मस्अलों में पांचवीं क्लास तक के बच्चों के लिए मस्अलों का ज़िक्र नहीं किया गया है, जो बालिग़ उम्र के लोगों से मुताल्लिक़ होते हैं और इस उम्र में उसको समझना और समझाना बहुत मुश्किल होता है, जैसे गुस्ल वग़ैरह के मस्अले।

उस्तादों की ख़िदमत में

आप लोगों से यह अर्ज़ करना है कि मेरी इस कोशिश को ध्यान से पढ़ें और बच्चों को पढ़ा कर तजुर्बा करें कि इसमें बच्चे कितना फ़ायदा उठाते हैं

अगर इसमें आपको कोई परेशानी हो या आप कोई फ़ायदेमंद मश्विरा देना चाहें, तो मुझे सीधे-सीधे बताएं, मैं शुक्रिए के साथ-साथ आपके मश्विरे को क़ुबूल करूंगा और आगे के हिस्सों में उसका ख़्याल रखूंगा।

आख़िर में मैं तो तमाम पढ़ाने वालों से दरख़्वास्त करूंगा कि आप मेरे लिए दुआ फ़रमाएं। अल्लाह हमारी इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए और तमाम मुसलमानों को अपने और अपने प्यारे नबी सल्ल0 के हुक्मों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन

वस्सलाम

ख़ादिम बदरुद्दीन

19 अप्रैल 1967

जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली

मुसलमान किसे कहते हैं?

मुसलमान उस शख़्स को कहते हैं जो दिल और ज़ुबान दोनों से खुदा को एक मानता है और उसकी बताई हुई बातों पर यक़ीन रखता है। मुसलमान जिस मज़हब को मानते हैं, उसे इस्लाम कहते हैं।

इस्लाम कहता है कि खुदा एक है, जिसने ज़मीन, आसमान, चांद, सूरज, सितारे और वे तमाम चीज़ें, जिन्हें हम देखते हैं या जिनको हम नहीं देख सकते, सब खुदा ने पैदा की हैं और वही बन्दगी और इबादत के लायक़ है।

अल्लाह मियां ने बहुत से नबी दुनिया में भेजे, आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० हैं, आपको अल्लाह मियां ने इस्लाम की तालीम देने के लिए भेजा था। आप खुदा के ख़ास बन्दे और रसूल हैं। आपने जिस किताब के ज़रिए तालीम दी, उसका नाम क़ुरआन मजीद है। यह अल्लाह की आख़िरी किताब है, जिसमें बड़ी अच्छी-अच्छी बातें लिखी हैं और इस्लाम की पूरी तालीम बयान की गई है।

इस्लाम का कलिमा

कलिमें से मुराद वे जुम्ले (वाक्य) हैं, जिनके पढ़ने से यह मालूम होता है कि हम एक खुदा को और रसूल को मानते हैं।

पहला कलिमा तय्यिबा

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

तर्जुमा : अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

दूसरा कलिमा शहादत

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू

तर्जुमा : मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

जो अल्लाह को नहीं मानते

जो लोग अल्लाह को या उसकी बताई हुई बातों को नहीं मानते, उन पर यक़ीन नहीं रखते, वे मुसलमान नहीं हैं।

बहुत से ऐसे लोग भी होते हैं, जो एक ख़ुदा को नहीं, बल्कि दो-तीन ख़ुदाओं को मानते हैं या ख़ुदा के अलावा और चीज़ों की इबादत करते हैं, ऐसे तमाम लोग भी मुसलमान नहीं हैं।

ऐसे लोगों को अल्लाह माफ़ नहीं करेंगे।

हज़रत मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

अल्लाह मियां ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० से पहले दुनिया में

बहुत से ऐसे लोगों को भेजा था, जिनका काम था कि यहां आकर अच्छी बातें बताएं, बुरे कामों से रोकें और अल्लाह की मर्ज़ी का काम खुद करके दिखाएं, इन तमाम लोगों को ख़ुदा का रसूल और नबी कहा जाता है। इन रसूलों के पास अल्लाह ने बहुत-सी छोटी-बड़ी किताबें भी भेजी थीं और ये किताबें लाने वाले अल्लाह के फ़रिश्ते जिब्रील थे।

इस तरह तमाम नबियों के आख़िर में हज़रत मुहम्मद सल्ल० तशरीफ़ लाए। यह अल्लाह के सबसे आख़िरी नबी हैं, इनके बाद न अब तक कोई नबी आया और न आगे नया नबी आएगा।

हम सब लोग हज़रत मुहम्मद सल्ल० ही की बताई हुई बातों पर अमल करते हैं। हज़रत मुहम्मद सल्ल० अब से लगभग चौदह सौ साल पहले अरब देश के एक मशहूर शहर मक्का में पैदा हुए थे। आप के वालिद साहब का नाम हज़रत अब्दुल्लाह और वालिदा साहिबा का नाम बीबी आमना था।

चालीस साल की उम्र में अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० को अपना प्यारा नबी बनाया और आपने उसी वक़्त से लोगों को अल्लाह की बातें बतानी शुरू कीं।

53 साल की उम्र तक हुज़ूर सल्ल० मक्का में रहे, फिर अरब के दूसरे शहर मदीना में तशरीफ़ ले आए। यहां आप दस साल तक इस्लाम की बातें लोगों को सुनाते और समझाते रहे।

63 साल की उम्र में हमारे सरकार हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह को प्यारे हो गए।

आपकी क़ब्रे मुबारक मदीना शहर में मस्जिदे नबवी में है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० तमाम पैग़म्बरों के बाद आख़िर में दुनिया में

तशरीफ़ लाए, लेकिन आपका दर्जा सब पैग़म्बरों से अच्छा है।

अगर कोई हज़रत मुहम्मद सल्ल० को खुदा का पैग़म्बर न माने, वह मुसलमान नहीं है।

क़ुरआन शरीफ़

जिस तरह हज़रत मुहम्मद सल्ल० से पहले अल्लाह मियां ने और बहुत-से पैग़म्बरों के पास अपनी किताबें भेजी थीं, उसी तरह हुज़ूर सल्ल० के पास भी एक किताब भेजी, इस का नाम क़ुरआन शरीफ़ है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, 'क़ुरआन शरीफ़ खुदा की किताब है और खुदा ने मेरे ऊपर उतारी है।'

पूरा क़ुरआन शरीफ़ एक बार में अल्लाह मियां के पास से हुज़ूर सल्ल० के पास नहीं आया, बल्कि थोड़ा-थोड़ा करके पूरा क़ुरआन 23 साल में आया।

क़ुरआन शरीफ़ के आने की यह शक्ल होती थी कि जब अल्लाह मियां को कोई हुक्म हुज़ूर सल्ल० के पास भेजने की ज़रूरत होती या पिछले नबियों का कोई वाक़िया हुज़ूर सल्ल० को सुनाना होता, तो उसके बारे में आयतें या सूरतें हुज़ूर सल्ल० के पास भेज देते।

खुदा के फ़रिश्ते हज़रत जिब्रील ये आयतें या सूरतें ला कर हुज़ूर सल्ल० को सुना देते थे, हुज़ूर सल्ल० खुद उन्हें याद कर लेते और किसी लिखने वाले से लिखवा देते।

आप खुद इसलिए नहीं लिखते थे कि आपने किसी से

पढ़ना-लिखना नहीं सीखा था और आप लिखना नहीं जानते थे।

लेकिन यहां एक बात ज़रूर समझ लेनी चाहिए कि हुज़ूर ने दुनिया में किसी से पढ़ना-लिखना नहीं सीखा था, मगर अल्लाह ने आपको सारी मख़्लुक़ से ज़्यादा इल्म और अक़्ल की दौलत दी थी।

क़ुरआन शरीफ़ भेजने का मक़सद

क़ुरआन शरीफ़ अल्लाह मियां की वह इज़्ज़त वाली किताब है, जिसमें तमाम इंसानों के लिए बहुत सी बातें लिखी हुई हैं।

यह किताब इसलिए दुनिया में भेजी गई है कि लोग क़ुरआन में लिखे हुए अल्लाह के जो हुक्म हैं, उनको पढ़ कर उन पर अमल करें और शरीफ़ इंसानों की तरह ज़िंदगी गुज़ारें।

पिछले ज़माने में जो अच्छे बुरे लोग दुनिया में आए, उनके हालात पढ़ें और यह समझें कि कौन से काम ऐसे हैं जिनसे अल्लाह मियां नाराज़ होते हैं और किन कामों से खुश होते हैं।

इस तरह अपने अन्दर अच्छे इंसानों की ख़ूबियां पैदा करें और बुरे कामों से बचें, ताकि दुनिया की ज़िंदगी में भी सुख-चैन नसीब हो और मरने के बाद अल्लाह मियां के सामने खुशी हासिल हो।

खुदा की इबादत और बन्दगी का तरीक़ा

वैसे तो हर अच्छा काम करना इबादत है, क्यों कि अच्छे काम से अल्लाह मियां खुश होते हैं, चाहे वह छोटे से छोटा ही क्यों न हो, जैसे रास्ते से कांटा हटा देना या दूसरों से बग़ैर ग़ुस्सा और नर्मी के साथ बात करना।

मगर अल्लाह मियां ने इबादत के कुछ ख़ास तरीक़े बताए हैं, वे यह हैं:—

नमाज़ पढ़ना, रोज़ा रखना, अपने माल का मुक़र्रर किया हुआ हिस्सा ग़रीबों को देना, जिसे ज़कात कहते हैं, बक़रीद के महीने में मक्का जाकर हज करना, जिसे हज कहते हैं

ये इबादत के ख़ास तरीक़े हैं; आगे चलकर इन सबको अलग-अलग खोल कर बयान किया जाएगा।

नमाज़ किसे कहते हैं?

नमाज़ खुदा की इबादत करने का एक तरीक़ा है, जिस पर अमल करना तमाम मुसलमान मर्द और औरतों पर ज़रूरी है।

मगर बीमारी, सफ़र या दूसरी ख़ास मजबूरियों की हालत में नमाज़ के हुक्मों में आसानी पैदा कर दी गई है, जिनकी तफ़्सील आप आगे चलकर पढ़ेंगे।

नमाज़ इस तरह अदा की जाती है कि पाक बदन और पाक साफ़ कपड़ों के साथ साफ़-सुथरी जगह पर, घर में या मस्जिद में खड़े हो जाते हैं।

फिर क़ुरआन शरीफ़ की आयतें पढ़ते हैं और ऐसी दुआएं पढ़ते हैं जिनमें अल्लाह तआला की तारीफ़ होती है। अल्लाह के सामने झुकते हैं और ज़मीन पर सर रख कर खुदा की बड़ाई और अपनी कमज़ोरी और मजबूरी ज़ाहिर करते हैं, वैसे तो हर जगह घर में और जंगल में नमाज़ हो जाती है, मगर मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का ज़्यादा सवाब होता है। नमाज़ में पच्छिम की तरफ़, जिस

तरफ़ शाम को सूरज छिपता है, उस तरफ़ मुंह करते हैं।

पच्छिम की तरफ़ इसलिए मुंह करते हैं, क्यों कि हमारे मुल्क के पच्छिम में अरब देश है और अरब में मक्का शहर है, जिसमें अल्लाह का घर काबा है।

इसी काबा को जिस तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ते है, क़िबला कहते हैं।

नमाज़ों के नाम, उनके वक़्त और रकूअतें

पहली नमाज़ 'फ़ज्र' : सुबह सूरज निकलने से पहले पढ़ी जाती है। इसमें दो रकूअत सुन्नत और दो रकूअत फ़र्ज़, कुल चार रकूअतें होती हैं।

दूसरी नमाज़ 'ज़ुहर' : दोपहर को सूरज ढलने के बाद पढ़ी जाती है। इसमें पहले चार रकूअत सुन्नत, फिर चार रकूअत फ़र्ज़, फिर दो रकूअत सुन्नत कुल दस रकूअतें पढ़ी जाती हैं।

तीसरी नमाज़ 'अस्र' : सूरज छिपने से दो डेढ़ घंटा पहले पढ़ी जाती है, इसमें चार रकूअत फ़र्ज़ होते हैं।

चौथी नमाज़ 'मग़्रिब' : शाम सूरज छिपने के फ़ौरन बाद पढ़ी जाती है। इसमें तीन रकूअत फ़र्ज़, दो रकूअत सुन्नत, कुल पांच रकूअतें पढ़ी जाती हैं।

पांचवी नमाज़ 'इशा' : सूरज छिपने के डेढ़-दो घंटे बाद पढ़ी जाती है। इसमें चार रकूअत फ़र्ज़, दो रकूअत सुन्नत, तीन रकूअत

वित्र, कुल नौ रकअतें होती है।

नमाज़ से पहले वुज़ू

नमाज़ पढ़ने से पहले हाथ, मुंह, पैर धोते हैं, इसे वुज़ू कहते हैं। वुज़ू के बग़ैर नमाज़ नहीं होती।

वुज़ू का पूरा तरीक़ा यह है

साफ़ बरतन में पाक पानी लेकर ज़रा ऊंची जगह पर बैठें, ताकि मुंह-हाथ धोने का पानी नीचे की तरफ़ जाए और कपड़ों पर छींटें न पड़ें।

वुज़ू करने के लिए क़िब्ले की तरफ़ मुंह कर लेना ज़्यादा अच्छा है, इसका मौक़ा न हो, तो कुछ नुक़्सान नहीं।

अब पहले आस्तीनें कुहनियों तक चढ़ा ली जाएं, फिर बिस्मिल्लाह पढ़ कर तीन बार गट्टों तक हाथ धोए जाएं, फिर तीन बार कुल्ली की जाए, मिस्वाक की जाए। अगर मिस्वाक न हो तो उगंली से दांत साफ़ कर लिए जाएं, इसके बाद तीन बार कुल्ली करें, फिर तीन बार नाक में थोड़ा पानी डाल कर नाक साफ़ कर ली जाए। नाक बाएं हाथ की छोटी उंगली और अंगूठे से साफ़ करनी चाहिए।

फिर तीन बार मुंह धोना चाहिए, मुंह धोने में ज़ोर से छपका मारना अच्छा नहीं, मुंह धोने में इसका ख़्याल रखा जाए कि माथे के बाल से ठोढ़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक पूरा मुंह धुल जाए।

फिर दोनों हाथ कुहनियों समेत धोए जाएं। पहले दाहिना हाथ,

तीन बार, फिर बायां हाथ तीन बार धोया जाए।

इसके बाद पानी से भिगो कर सर पर फेरा जाए, इसे सर का मसह कहते हैं।

फिर कान और गरदन का मसह किया जाए, मसह सिर्फ़ एक बार करना चाहिए।

इसके बाद तीन-तीन बार दोनों पैर टख़नों समेत धोए जाएं, पहले दाहिना पैर, फिर बायां पैर।

यह वुज़ू करने की पूरी तर्कीब है।

अज़ान का क्या मतलब है?

जब नमाज़ का वक़्त आता है, तो नमाज़ से कुछ देर पहले लोगों को यह बताने के लिए कि अब नमाज़ का वक़्त क़रीब आ गया है, एक आदमी नीचे लिखे हुए लफ़्ज़ों को कहता है। इन्हीं लफ़्ज़ों को अज़ान कहते हैं।

अज़ान कहने का तरीक़ा यह है कि एक आदमी जिसकी आवाज़ तेज़ हो, सही लफ़्ज़ों के साथ अज़ान के जुम्ले कह सके, वुज़ू करके किसी ऊंची जगह खड़ा हो, अपना मुंह क़िब्ले की तरफ़ करे और दोनों हाथों के अंगूठे के बराबर वाली उंगलियां अपने कानों के सूराख में रखे, फिर अज़ान के लफ़्ज़ जितनी ज़ोर से कह सके, ठहर-ठहर कर कहे।

वुज़ू करके अज़ान कहना ज़्यादा अच्छा है, लेकिन अगर किसी ने बग़ैर वुज़ू के अज़ान कह दी, तो भी अज़ान हो जाएगी, मगर सवाब कम मिलेगा।

अज़ान के लफ़्ज़

अल्लाहु अकबर 'अल्लाह सबसे बड़ा है' (चार बार)

अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाह (दो बार)

'मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं।'

अश्हदु अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह (दो बार)

'मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल है।'

हय-य अलस्सलात 'आओ नमाज़ के लिए' (दो बार)

हय-य अलल फ़लाह ' आओ कामियाबी की तरफ़' (दो बार)

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

ला इला-ह इल्लल्लाह

सब नमाज़ों में अज़ान के यही लफ़्ज़ कहे जाते हैं, सिर्फ़ फ़ज्र की अज़ान में 'हय-य अलल फ़लाह' के बाद दो बार 'अस्सलातु ख़ैरुम मिनन्नौमि' कहा जाता है यानी नमाज़ नींद से अच्छी है। (अज़ान के बाद की दुआ आगे है।)

इक़ामत किसे कहते हैं?

अज़ान के बाद जब जमाअत खड़ी होती है, तो फिर वही लफ़्ज़ ज़ोर से कहे जाते हैं, ताकि लोगों को यह मालूम हो जाए कि अब जमाअत खड़ी हो गई, इसे इक़ामत कहते हैं। इक़ामत में भी अज़ान ही के लफ़्ज़ होते हैं, सिर्फ़ फ़र्क़ यह है कि 'हय-य अलल फ़लाह' के

बाद 'क़द क़ामतिस्सलात' (जमाअत खड़ी हो गई) दो बार कहा जाता है।

अज़ान ज़रा ठहर-ठहर कर कही जाती है और इक़ामत जल्द कहना चाहिए।

इक़ामत के ख़त्म होते ही जमाअत की नमाज़ शुरू हो जाती है।

जमाअत की नामज़

कुछ आदमी मिल कर जो नमाज़ पढ़ते हैं, उसे जमाअत की नमाज़ कहते हैं। जमाअत की नमाज़ में सत्ताईस नमाज़ों का सवाब मिलता है और अकेले नमाज़ पढ़ने में सिर्फ़ एक नमाज़ का सवाब मिलता है।

जो आदमी जमाअत की नमाज़ पढ़ाता है, उसे इमाम कहते हैं और जो लोग 'इमाम' के पीछे नमाज़ पढ़ते हैं उन्हें 'मुक़्तदी' कहते है। अकेले नमाज़ वाले को 'मुंफ़रिद' कहते हैं।

जमाअत की नमाज़ का तरीक़ा

जमाअत की नमाज़ घर में मस्जिद में और हर साफ़-सुथरी जगह पर पढ़ी जा सकती है।

इसका तरीक़ा यह है कि साफ़-सुथरी जगह, जहां गन्दगी न हो, पाक कपड़ा बिछाया जाए, फिर जो लोग नमाज़ पढ़ रहे हैं, वे क़िब्ले की तरफ़ मुंह करके कंधे से कंधा मिला कर सीधे खड़े हों।

जब पहली सफ़ में जगह भर जाए तो पीछे इसी तरह दूसरी लाइन बना दी जाए। इसके बाद जितने लोग आते जाएं, पीछे लाइनें

बनाते चले जाएं; हर सफ़ के दर्मियान इतनी जगह छोड़ें जिसमें आसानी से रूकूअ-सज्दा किया जा सके।

तेरह-चौदह साल से कम उम्र बच्चों को बड़े लोगों की लाइन में नहीं खड़ा होना चाहिए।

छोटे बच्चे ख़ामोशी से बड़े लोगों के पीछे लाइन बनाएं। अब अगर नमाज़ पढ़ाने वाला इमाम पहले से मुक़र्रर हो तो वह नमाज़ पढ़ाए और अगर कोई इमाम मुक़र्रर न हो तो नमाज़ पढ़ने वालों में जो सबसे अच्छा आदमी नमाज़ पढ़ाने के क़ाबिल हो, उसे इमाम बनाया जाए। इमाम को सबसे आगे बीच में खड़ा होना चाहिए। जो लोग जमाअत शुरू होने के बाद आएं, वे भी वुज़ू करके जमाअत में शरीक हो सकते हैं।

बाद में आने वाले लोगों को जितनी रक्अतें इमाम के साथ मिलें, वह पढ़ लें और जो छूट जाएं वह इमाम के सलाम फेरने के बाद खुद पूरी कर लें।

नमाज़ की नीयत

नमाज़ का मतलब है दिल में इरादा करना। नमाज़ शुरू करने से पहले दिल में नमाज़ का इरादा करना भी ज़रूरी है। नीयत के कुछ तो मुस्तक़िल लफ़्ज़ होते हैं जो हर नमाज़ की नीयत में रहते हैं और कुछ लफ़्ज़ ऐसे हैं जो हर नमाज़ में बदलते रहते हैं, यहां हम नीयत के मुस्तक़िल लफ़्ज़ों के नीचे लाइन खींच रहे हैं और लफ़्ज़ बदलते रहते हैं, उन्हें बग़ैर लाइन के लिखेंगे।

'मैं नीयत करता हूं दो रक्अत फ़र्ज़, वक़्त फ़ज्र का वास्ते अल्लाह तआला के पीछे इस इमाम के मेरा मुंह काबा शरीफ़ की

तरफ़, अल्लाहु अकबर

यह बात यहां और समझ लीजिए कि नीयत के इन लफ़्ज़ों का जुबान से अदा करना ज़रूरी नहीं है, सिर्फ़ दिल में ख़्याल कर लेना काफ़ी है।

नमाज़ की दुआएं और सूरतें

अब पहले नमाज़ की दुआएं और सूरतें ज़ुबानी याद कर लीजिए, फिर नमाज़ पढ़ने का पूरा तरीक़ा बताया जाएगा–

सना

सुब-हा-न-कल्लाहुम-म व बिहम्दि-क व तबारकस्मु-क व तआला जद्दु-क व ला-इला-ह ग़ैरु-क

(ऐ अल्लाह! हम तेरी पाकी का इक़रार करते है। और तेरी तारीफ़ बयान करते हैं ओर तेरा नाम बरकतों वाला है और तेरी बुज़ुगी बरतर है और तेरे सिवा कोई इबादत का हक़दार नहीं)

अऊज़ु बि-क मिनश्शै तानिर्रजीम०

(मैं अल्लाह की पनाह लेता हूं मर्दूद शैतान से)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है)

सूरः फ़ातिहा या अलहम्दु शरीफ़

अल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन० अर्रहमानिर्रहीम० मालिकि

यौमिद्दीन० ईया-क नअ़बुदु व ईया-क नस्तईन० इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम० सिरातल्लज़ी-न अन् अ़म-त अलैहिम ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम व लज़्ज़ाल्लीन०

(हर क़िस्म की तारीफ़ें अल्लाह के लायक़ हैं, जो तमाम दुनियाओं का पालने वाला बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है, बदले के दिन का मालिक है। (ऐ अल्लाह!) हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते हैं। हमको सीधे रास्ते पर चला उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तूने इनआम फ़रमाया है, न उनके रास्ते पर, जिन पर तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ और न गुमराहों के रास्ते पर।

सूरः कौसर

इन्ना आतैना-कल कौसर फ़सल्लि लि रब्बि-क वन्हर, इन-न शानि अ-क हुवल अब्तर०

(ऐ नबी! हमने तुमको कौसर अता की है, पस तुम अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ो और क़ुर्बानी करो। बेशक तुम्हारा दुश्मन ही बे-नाम व निशान हो जाने वाला है।)

सूरः इख़्लास

क़ुल हुवल्लाहु अहद० अल्लाहुस्समद, लम यलिद व लम यूलद व लम यकुल्लहू कुफ़ुवन अहद०

'(ऐ नबी!) कह दो कि वह [illegible] अल्लाह तआला (अकेला) है। अल्लाह बे-नियाज़ है, उससे कोई पैदा नहीं हुआ, न वह किसी से पैदा हुआ और कोई उसका हमसर नहीं।'

रुकूअ़ यानी झुकने की हालत में

सुब्हा-न रब्बियल अज़ीम०

(पाकी बयान करता हूं अपने परवरदिगार बुज़ुर्ग की)

रुकूअ़ से उठते हुए

समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह

(अल्लाह ने (उसकी) सुन ली, जिसने उसकी तारीफ़ की)

रब्बना लकल हम्दु

(ऐ हमारे परवरदिगार! तेरे ही वास्ते तमाम तारीफ़ है)

सज्दा (यानी ज़मीन पर सर रखने की हालत)

सुब् हा-न रब्बियल अअ़ला

(पाकी बयान करता हूं मैं अपने परवरदिगार बरतर की)

अत्तहीयात

अत्तहीयातु लिल्लाहि वस्स-लवातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अलै-क अय्युहन्नबीयु व रह मतुल्लाहि व ब-र-कातुहू अस्सलामु अलैना व अला अ़िबादिल्लाहि-स्सालिहीन अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०

(तमाम क़ौली इबादतें और तमाम फ़ेअली इबादतें और तमाम माली इबादतें अल्लाह ही के लिए हैं, सलाम हो तुम पर ऐ नबी और अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें! सलाम हो हम पर और

अल्लाह के नेक बन्दों पर। गवाही देता हूं मैं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और गवाही देता हूं मैं कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और पैग़म्बर हैं।)

दरूद शरिफ़

अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदिंव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम मजीद०

अल्लाहुम-म बारिक अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम मजीद०

(ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद पर और उनकी आल पर, जैसे कि रहमत नाज़िल फ़रमाई तूने इब्राहीम पर और उनकी आल पर, बेशक तू तारीफ़ के लायक़, बड़ी बुज़ुर्गी वाला है।

ऐ अल्लाह! बरकत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद पर और उनकी आल पर जैसे बरकत नाज़िल फ़रमाई तूने इब्राहीम पर और उनकी आल पर। बेशक तू तारीफ़ के लायक़ बड़ी बुज़ुर्गी वाला है।)

दरूद शरीफ़ के बाद की दुआ

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-नतंव-व फ़िल आख़िरति ह-स-न-तंव-व क़िना अज़ाबन्नारि०

(ऐ हमारे रब! हमको दुनिया में भलाई अता कर और हमको आख़िरत में भलाई अता कर और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा)

सलाम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि

(सलाम हो तुम पर और अल्लाह की रहमत)

नमाज़ के बाद की दुआ

अल्लाहुम-म अन्तस्सलामु व मिन-कस्सलामु त-बारक-त या ज़ल जलालि वल इकरामि○

(ऐ अल्लाह! तू ही सलामती देने वाला है और तेरी ही तरफ़ से सलामती (मिल सकती) है। बहुत बरकत वाला है तू ऐ अज़्मत और बुज़ुर्गी वाले।)

दुआ-ए-क़ुनूत

अल्लाहुम-म इन्ना नस्तईनु-क व नस्तग़्फ़िरु-क व नूमिनु बि-क व न-त-वक्कलु अले-क व नुस्नी अलैकल ख़ै-र व नश्कुरु-क व ला नक्फ़ुरु-क व नख़्लउ व नतरुकु मंय्यफ़जुरु-क अल्लाहुम-म ईया-क नअ़ बुदु व ल-क नुसल्ली व नस्जुदु व इलै-क नसआ़ व नह्फ़िदु व नर्जू रह-म-त-क व नख़्शा अज़ा-ब-क इन-न अज़ा-ब-क बिलकुफ़्फ़ारि मुल हिक़○

(ऐ अल्लाह! हम तुझ से मदद मांगते हैं और मग़्फ़िरत तलब करते हैं और तेरे ऊपर ईमान लाते हैं और तेरे ऊपर भरोसा करते हैं और तेरी बेहतर तारीफ़ करते हैं और तेरा शुक्र अदा करते हैं और तेरी ना शुक्री नहीं करते और अलग कर देते और छोड़ देते हैं उस आदमी को जो तेरी नाफ़रमानी करे। ऐ अल्लाह! हम तेरी ही इबादत

करते हैं और ख़ास तेरे लिए नमाज़ पढ़ते और सज्दा करते हैं और तेरी तरफ़ दौड़ते और झपटते हैं और तेरी ही रहमत की उम्मीद रखते हैं और तेरे अज़ाब से डरते हैं। बेशक तेरा अज़ाब काफ़िरों को पहुंचाने वाला है।)

नमाज़ पढ़ने का पूरा तरीक़ा

जब आदमी नमाज़ का पूरा इरादा करे तो सबसे पहले यह देख ले कि उसका बदन और कपड़े पाक-साफ़ हों।

फिर वुज़ू करके पाक जगह पर क़िब्ले की तरफ़ मुंह करके खड़ा हो।

अब पहले दिल में नमाज़ की नीयत करे।

फिर दोनों हाथ कानों तक इस तरह उठाए कि हाथों के अंगूठे दोनों कानों की लौ के बराबर आ जाएं।

फिर अल्लाहु अकबर कह कर हाथ नाफ़ से नीचे इस तरह बांधे कि बायां हाथ नीचे रहे और दाहिना हाथ ऊपर हो।

फिर 'सुब-हा-न-क अल्लाहुम-म' पढ़े,

'अऊज़ु बिल्लाह' और 'बिस्मिल्लाह' पढ़े,

इसके बाद अलहम्दु पढ़े, फिर क़ुल हुवल्लाहु या कोई और सूरः जो याद हो, पढ़े,

अल्लाहु अकबर कह कर रुकूअ़ में जाए।

रुकूअ़ की हालत में तस्बीह 'सुब-हा-न रब्बियल अज़ीम' तीन या पांच बार पढ़े 'समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह' कहते हुए सीधे खड़ा हो और 'रब्बना ल-कल हम्दु' पढ़े।

फिर 'अल्लाहु अकबर' कहते हुए सज्दे में जाए, सज्दा में इस तरह जाए कि पहले दोनों घुटने ज़मीन पर रखे जाएं, फिर दोनों हाथ फिर दोनों हाथों के बीच में पहले नाक, फिर माथा ज़मीन पर रखे, सज्दे में तीन बार या पांच बार 'सुब-हा-न रब्बियल आला' पढ़े, फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए बैठ जाए।

फिर इसी तरह दूसरा सज्दा करे।

दूसरे सज्दे के बाद अल्लाहु अकबर कहते हुए सीधा खड़ा हो जाए,

यह एक रक्अत हो गई। अब दूसरी रक्अत शुरू होगी।

दूसरी रक्अत में सिर्फ़ बिस्मिल्लाह पढ़ कर अल-हम्दु शरीफ़ पढ़े, अल-हम्दु शरीफ़ के बाद कोई सूरा पढ़े।

फिर पहली रक्अत की तरह रुकूअ़-सज्दा करे।

दोनों सज्दों के बाद बायां पैर बिछा कर उस पर बैठे और दाहिना पैर खड़ा रखे,

अब अत्तहीयात पढ़े। अत्तहीयात में जब ला इला-ह पर पहुंचे तो सीधे हाथ के अंगूठे के बराबर वाली उंगली ऊपर उठाए और इल्लल्लाह पर नीचे गिराए। इसके बाद दोनों दरूद शरीफ़ और कोई दुआ पढ़े। अब धीरे से दाहिनी तरफ़ मुंह फेरते हुए 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि' कहे, फिर बाईं तरफ़ इसी तरह सलाम फेरे।

सलाम फेरने के बाद दोनों हाथ सीने के बराबर उठा कर दुआ पढ़े। दुआ के बाद दोनों हाथ मुंह पर फेर ले।

अज़ान के बाद की दुआ

अल्लाहुम-म रब-ब हाज़िहिद दअ़वतित्ताम्मति वस्सलातिल

क़ाइमति आति मुहम्म-द-निल-वसी ल-त वल फ़ज़ी-ल-त वद-द-र जतर रफ़ीअ-त वब असहु मक़ामम महमू-द निल्लज़ी व अत्तहू वर्ज़ुक़्ना शफ़ा-अ-त-हू यौमल क़ियामति इन्न-क ला तुख़्लिफ़ुल मीआ़द बिरहमति-क या अर-हमर्राहिमीन०

तर्जुमा– ऐ अल्लाह। इस कामिल दावत और इस खड़ी होने वाली नमाज़ के मालिक! हज़रत मुहम्मद को अपना क़ुर्ब, बड़ाई और बुलन्द मक़ाम अता फ़रमा और उनको उस मक़ामे महमूद पर पहुंचा, जिसका तूने उनसे वायदा फ़रमाया है और हमें क़ियामत के दिन उनकी शफ़ाअ़त नसीब फ़रमा। बेशक तू कभी वायदा ख़िलाफ़ी नहीं करता, अपनी रहमत से ऐ सबसे बढ़ कर रहम करने वाले!

नमाज़ के ज़रूरी फ़ायदे

1. हर नमाज़ की पहली रकूअत में 'सुब-हा-न-क अल्लाहुम-म पढ़ना चाहिए।

2. हर नमाज़ की हर रकूअत में अलहम्दु शरीफ़ पढ़नी चाहिए।

3. चार रकूअत वाली फ़र्ज़ नमाज़ की आख़िरी दो रकूअत में और मग़रिब की आख़िरी रकूअत में अलहम्दु शरीफ़ के बाद सूरः नहीं पढ़ी जाती, इसके अलावा तमाम नमाज़ों की हर रकूअत में अलहम्दु शरीफ़ के बाद सूरः पढ़नी चाहिए।

4. हर नमाज़ में दो रकूअत के बाद जो अत्तहीयात पढ़ने के लिए बैठते हैं, उसे क़ादा कहते हैं।

5. सिर्फ़ दो रकूअत वाली नमाज़ में एक क़ादा होता है, उसी को आख़िरी क़ादा कहते हैं।

6. हर नमाज़ के पहले क़ादे में सिर्फ़ अत्तहीयात पढ़ी जाती है और दूसरे यानी आख़िरी क़ादों में अत्तहीयात, दरुदशरीफ़ और दुआ पढ़ी जाती है। इसके बाद सलाम फेर दिया जाता है, फिर दुआ मांगते हैं।

7. मुंफ़रिद और इमाम की नमाज़ एक-सी होती है। इमाम भी अपनी नमाज़ में सब चीज़ें पढ़ता है और मुंफ़रिद भी।

8. मुक़्तदी यानी इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाला अल हम्दु शरीफ़, सूरा और रुकूअ से उठते वक़्त समिअल्लाहु लिमन हमिदा नहीं पढ़ता बाक़ी सब कुछ पढ़ता है।

मर्द और औरत की नमाज़ में फ़र्क़

1. सबसे पहली तकबीर में जब हाथ उठाए जाते हैं, तो मर्द दोनों हाथ कानों की लौ तक उठा कर नाफ़ के नीचे बांधते हैं, औरतें दोनों हाथ सिर्फ़ कंधों के बराबर तक उठा कर सीने पर बांध लेती हैं, बायां हाथ नीचे रखती हैं और दायां उसके ऊपर।

2. सज्दे में मर्द कमर उठा कर दोनों हाथ अपनी टांगों से अलग रखते हैं। औरतें सज्दा में न कमर उठाती है, न अपने टांगों को टांगों से अलग रखती है, बल्कि हाथ और टांगें मिला कर ज़मीन से मिल जाती हैं।

3. जब क़ादा में बैठते हैं तो मर्द बायां पैर बिछा कर उस पर बैठते हैं। और दायां पैर खड़ा रखते हैं औरतें दोनों पैर दाहिनी तरफ़ निकाल कर ज़मीन पर बैठती हैं, कोई पैर खड़ा नहीं रखतीं।

इसके अलावा मर्दों और औरतों की नामज़ एक जैसी होती है।

नमाज़ के आदाब

1. जब नमाज़ी खड़ा हो तो अपने सज्दे की जगह देखता रहे,

2. जब रुकूअ़ में जाए तो अपने पैरों पर निगाह रखे,

3. जब सज्दे में जाए तो अपनी नाक के रुख़ पर नज़र रखे,

4. जब क़ादे में बैठे तो अपनी गोद में नज़र रखे,

5. जब सलाम फेरे तो अपने कंधों को देखे,

6. अगर नमाज़ में खांसी आ जाए तो रोकने की कोशिश करे। अगर न रुक सके तो धीरे से खांसे,

7. अगर जम्हाई आए तो ज़्यादा मुंह न खोले,

8. जब रुकूअ़ में जाए तो अपनी कमर बिल्कुल सीधी रखे और दोनों हाथों से अपने घुटनों को मज़बूत पकड़े,

नमाज़ की दुआ याद करने का आसान तरीक़ा

इस तरीक़े से बच्चे बग़ैर किसी सख़्ती के ख़ुद शौक़ से दुआएं याद कर लेते हैं।

उस्तादों के लिए हिदायतें

पहले हर-हर बच्चे का अलग-अलग दूसरे पेज पर बने हुए नक़्शे के मुताबिक़ एक कार्ड बना लीजिए या हर बच्चा अपनी किताब के

इसी नक़्शे को इस्तेमाल करे।

फिर जो बच्चा जिस ख़ाने की दुआ आपको सही तलफ़्फ़ुज़ के साथ सुना दे, उसके ख़ाने में टिक मार्क लगा दीजिए या हल्के से दस्तख़त कर दीजिए। इसी तरह हर तालिब इल्म को खुद शौक़ पैदा होगा कि जल्दी से जल्दी अपना कार्ड पूरा कर ले और सबको नमाज़ याद हो जाएगी।

ज़ुबानी इम्तिहान के नम्बर भी उसी कार्ड की मदद से निहायत मुंसिफ़ाना तरीक़े पर दिए जा सकते हैं, जैसे हर ख़ाने का मुक़र्रर एक नम्बर कर लीजिए। इसके बाद जब आप इम्तिहान लेने लगें तो बच्चे का कार्ड देख लीजिए, जितने ख़ाने भरे होंगे, उतने नम्बर दे दीजिए।

इसी तरह आप पूरी क्लास के बच्चों के लिए एक बड़ा चार्ट भी बना सकते हैं, उसमें सिर्फ़ इतनी तब्दीली करनी होगी कि महीने के ख़ानो में बच्चों के नाम लिख दीजिए और हर एक ख़ाने में पहले की तरह टिक मार्क लगाते जाए।

इस तरीक़े से क्लास के सब बच्चों में आपसी मुक़ाबले का जज़्बा पैदा होगा और अपने नाम के आगे ज़्यादा से ज़्यादा ख़ानो में निशान लगवाने का शौक़ पैदा होगा। नतीजा यह होगा कि सब के ज़बानी काम और मुकम्मल रिकार्ड हर वक़्त आप के सामने रहेगा और बग़ैर किसी सख़्ती के सब को ज़्यादा से ज़्यादा दुआएं याद हो जाएंगी। क्लास के चार्ट पर ऊपर स्टुडेन्ट के नाम की जगह स्टुडेन्ट्स दर्जा........लिख दीजिए।

नमाज की दुआएं याद करने का चार्ट

नाम स्कूल.................................. दर्जा.........................

नाम तालिब इल्म.......................... सेक्शन.....................

महीने						
1. जुलाई						
2. अगस्त						
3. सितम्बर						
4. अक्तूबर						
5. नवम्बर						
6. दिसम्बर						
7. जनवरी						
8. फ़रवरी						
9. मार्च						
10. अप्रैल						
11. मई						
12. जून						

प्यारे नबी सल्ल० की प्यारी बातें

1. अल्लाह के बन्दो! सब आपस में भाई भाई हो जाओ,
2. पाकी ईमान का एक हिस्सा है,
3. इल्म हासिल करना हर मुसलमान औरत और मर्द पर फ़र्ज़ है,

4. मोमिन झूठा नहीं होता,

5. मोमिन बुज़दिल नहीं होता,

6. मोमिन बद कलाम नहीं होता,

7. क़ियामत में सबसे ज़्यादा आमाल अच्छे अख़्लाक़ होंगे,

8. जो बड़ों की इज़्ज़त न करे और जो छोटों पर रहम न करे, वह हम में से नहीं।